Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23072
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23072

CONFERENCE PAPER

वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकताएँ

Kunwarpreet Singh

1. M.A.UGC NET Research Scholar Banasthali Vidyapith, Banasthali.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
पाठ्यक्रम, संगीत शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, घराना पद्धति, सुगम संगीत, शास्त्रीय संगीत, तकनीकी विकास, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम सुधार, डिजिटल शिक्षा

Abstract

यह शोध लेख “वर्तमान पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकताएँ” संगीत शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में पाठ्यक्रम की संरचना, विकास और समकालीन चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पाठ्यक्रम किसी भी शिक्षा प्रणाली का आधारभूत घटक है, जो शिक्षण एवं अधिगम की दिशा निर्धारित करता है। लेख में वैदिक काल से लेकर आधुनिक समय तक संगीत शिक्षण पद्धति के विकास को रेखांकित किया गया है, जहाँ प्रारम्भ में गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत व्यक्तिगत एवं अनुशासित शिक्षण पद्धति प्रचलित थी, जो समय के साथ घराना प्रणाली में परिवर्तित हुई। आधुनिक युग में तकनीकी विकास जैसे रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर एवं इंटरनेट ने संगीत शिक्षण की पारंपरिक सीमाओं को समाप्त कर दिया है, जिससे शिक्षार्थियों को विविध घरानों और शैलियों तक पहुँच प्राप्त हुई है। तथापि, वर्तमान पाठ्यक्रम में कई व्यावहारिक समस्याएँ विद्यमान हैं, जैसे विभिन्न स्तरों पर विषय-वस्तु की पुनरावृत्ति, विद्यालय स्तर पर संगीत शिक्षा की अनिवार्यता का अभाव, तथा प्रारंभिक स्तर पर ही जटिल शास्त्रीय संगीत पर अत्यधिक बल। लेखक ने सुझाव दिया है कि प्रारंभिक स्तर पर आधारभूत संगीत ज्ञान (स्वर, नाद, सप्तक आदि) के साथ-साथ सुगम संगीत (भजन, गीत, लोकगीत) को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान दिया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों की रुचि एवं सहभागिता बढ़े। इसके अतिरिक्त, संगीत शिक्षा में कम्प्यूटर एवं डिजिटल संसाधनों को शामिल

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- Kunwarpreet Singh
Address:-M.A.UGC NET Research Scholar Banasthali Vidyapith, Banasthali.

करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है, जिससे शिक्षार्थी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से ज्ञान अर्जन कर सकें। अंततः, यह निष्कर्ष निकाला गया है कि समयानुकूल पाठ्यक्रम परिवर्तन न केवल संगीत शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाएगा, बल्कि अधिकाधिक विद्यार्थियों को इस क्षेत्र की ओर आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होगा।

Introduction:-

पाठयक्रम किसी भी शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा में शिक्षक एंव शिक्षार्थी दोनो के लिए ही सम्बन्धित विषयों के मजमूनों को एक सूत्र में बांधने का कार्य पाठयक्रम द्वारा ही संभव है। सरल शब्दों में हम पाठयक्रम शब्द को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं- किसी भी विषय को उसके विभिन्न विषयों-उपविषयों, क्षेत्रो- सीमाओं आदि में बांध कर एक निश्चित मार्ग निर्धारित समय में नियत करने को ही पाठयक्रम कह सकते है उदाहरण के लिए संगीत विषय की यदि बात करे तो शास्त्र पक्ष में अनेक विषय अथाह सागर के रुप में उपलब्ध हैं परन्तू संगीत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिए नाद, स्वर, सप्तक, थाट, राग, आदि को पाठयक्रम में रखना उचित है। पाठयक्रम को यदि संगीत की दृष्टि से देखंे तो वैदिक काल से ही इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है । डा0 मधुबाला सक्सेना के अनुसार, 'वैदिक काल में शास्त्रीय संगीत को साम के रुप मे जाना जाता था' 1,। श्री पन्ना लाल मदान के अनुसार, 'सामवेद ही संगीत कला का चश्मा है । आदिकाल के ऋषियों ने यह कला यहा से ही प्राप्त की' 2,। अंजलि मितल के अनुसार, 'ऋगवेद के जिन श्लोकों कों होम यज्ञादि के समय सूर में आवृति की जाती थी उनको लेकर सामबेद की रचना हुई'[3,। सामवेद काल में सामिका गाथिका, अखचका यह तीन प्रकार का गायन होता था। सामिका का प्रयोग सामगान मंे,

गाथिका का गाथाकाल में तथा अखचका का रिचा (मन्त्रों) के उच्चारण हेतु प्रयोग होता था। उस समय शिक्षण हेतु शाखायें होती थी। उदाहरण के लिए जैमिनी शाखा के गुरु अपनी ही शाखा के शिष्यों को शिक्षा देते थे। समय के साथ चलते चलते 18वीं सदी में वैदिक काल की गुरु शिष्य की यह परंपरा घरानों के रुप में परिवर्तित हो गई । डा0 मधुबाला सक्सेना के अनुसार,'घराना शब्द का प्रचार पिछले लगभग 150 वर्षों के बीच हुआ है'।[4, बाबू भाई बैकर के अनुसार, 'घराना शब्द का अर्थ है वर्ग, सम्प्रदंाय, कुटुंब, वंश-परपंरा आदि'।[5, अतरू स्पष्ट है कि एक घराने के गुरु अपने घराने के शिष्यों को ही तालीम देते थे। घराने में आरम्भिक शिक्षा के लिय गुरु अपने शिष्यों को केवल 'सा' (षड़ज) का ही अभ्यास लंबे समय तक करवाते थे क्योकि उनका विचार था 'एक साधे सब सधे सब साधे सब जाऐ' अर्थात यदि एक ही स्वर को उचित ढंग से साध लिया जाऐ तो सभी स्वरों की साधना

स्वंय ही हो जाती है। ड0 मुकेश गर्ग के अनुसार, 'विद्यार्थी के स्वर ज्ञान से गुरु जब सतुंष्ट हो जाते थे तभी राग और उसकी बन्दिश का नंबर आता था । एक एक राग की तालीम बरसों चलती थी'।[6] घरानों में शिष्य अपने ही घराने के गुरुओं से ज्ञान अर्जित करते थे। शिष्य को अपनी इच्छा अनुसार दूसरे घराने की चीजों को अपने गाने मंे सम्मिलित करने की मनाही थी । ड0 मुकेश गर्ग के अनुसार, 'अनुशासन घरानों की तालीम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा था'।[7, घराना पद्धति में एक निर्धारित पाठयक्रम अनुसार गुरु अपने शिष्य को सीना-ब-सीना तालीम देते थे जिसका नियोजन वह खुद करते थे । आज कल रेडियों, टेप रिकार्डर, सी ़डी ़ प्लेयर, डी ़वी ़डी ़ प्लेयर तथा कम्प्यूटर आदि ने घरानो में प्रचलित अनुशासन समाप्त कर दिया है। इस कारण आज का

शिष्य अनेक गुरुआंे अथवा घरानों की गायकी, वादन परम्परा से परिचित होता है। आधुनिक संगीत शिक्षा पद्धति में पाठयक्रम की अनेक समस्याऐं हैं इन समस्याऔं और इन के निवारण हेतु कुछ सुझाव देने का प्रयास शोघकर्ता द्वारा किया जा रहा है। डा0 मधुबाला सक्सेना के अनुसार,'कुछ विश्वविद्यालयों के

पाठयक्रमों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता हैं कि उनमें कुछ केन्द्र ऐसे है जिनके उच्चतर माध्यमिक स्तर से लेकर स्नातक कक्षाओं के पाठयक्रम में बराबर स्थान दिया गया है । उदाहरण स्वरुप संगीत के परिभाषिक शब्दोेें के अन्तर्गत वादी, संवादी, स्वर, थाट, जाति, वर्ण, स्थाई, राग आदि को यदि स्कूल के स्तर पर पढ़ाया जा चुका है तो स्नातक स्तर पर उसे यह पढ़ाने की क्या आवश्यकता है क्योकि इस स्तर पर आकर तो विद्यार्थी प्रयोगात्मक रुप से हर राग में इन सभी परिभाषिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त करता ही जाता है और उसका ज्ञान इन परिभाषिक शब्दों के संबंध में स्वत बढ़ता जाता है, तब शास्त्र की परीक्षा पत्र में पुनरू इन सब पर प्रश्न रखना तर्क संगत प्रतीत नहीं होता'।[8, आज की दृष्टि से डा0 मधुबाला सक्सेना का तर्क, तर्कसंगत प्रतीत नहीेें होता क्योंकि आजकल विद्यालयों में तो संगीत विषय अनिवार्य है ही नहीं। यह विद्यार्थियों की स्वेच्छा पर निर्भर है कि वह संगीत विषय को लेते है या नहीं कुछ विद्यालयों मंे वह यदि संगीत विषय ले भी लेते है तों अध्यापकों द्वारा उन्हें मात्र कुछ स्वर ज्ञान करवा कर परीक्षा में सफल करवा दिया जाता है।

सारंाश यह कि महाविद्यालयों मंे बी ़ऐ ़ भाग प्रथम में विद्यार्थी का संगीत सीखने का प्रथम वर्ष होता है तो ऐसे समय में उनके बी ़ऐ ़ भाग प्रथम के संगीत शास्त्र के पाठयक्रम की शुरुआत संगीत, स्वर, नाद, सप्तक, थाट, राग, जाति आदि विषयों सें ही की जानी चाहिए, जैसा के पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला[9, तथा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक[10, के बी ़ऐ ़भाग प्रथम के संगीत के गायन एंव वादन के पाठयक्रमों मंे अंकित हैं । आजादी के बाद से जब से संगीत विषय के तौर पर विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में लागु किया गया है, विद्यार्थी को विद्यालय स्तर पर स्वर ज्ञान करवा कर सीधे शास्त्रीय संगीत अर्थात छोटे ख्याल को कैसे गाया या बजाया जाऐ सीखने पर लगा दिया जाता है । यह प्रथा विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक अब तक चली आ रही है । स्वर ज्ञान तथा शास्त्रीय संगीत के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी सुगम संगीत को लगभग छोड़ ही दिया गया है । विद्यालय स्तर के बी ़ऐ ़ की किसी भी कलास का पाठयक्रम उठा कर देख लें, क्रियात्मक परीक्षा में सुगम संगीत मंे से लगभग नाम मात्र ही पूछा जाता है । आज के दौर मंेें जब रेडियो तथा टी ़वी ़ द्वारा संगीत का और खासकर सुगम संगीत का प्रचार बहुत तीव्र गति से हो रहा है तो हमें भी सुगम संगीत को पाठयक्रम में सम्मिलित कर के संगीत के प्रसार ने योगदान डालना चाहिए। यह कटु सचाई है कि सुगम संगीत में स्वर ज्ञान परिपक्व होना अति आवश्यक है। क्योंकि अधिकतर गीत, भजन, लोक गीत इत्यादि सुगम संगीत के अंगों में स्वरों के लगाव एक के बाद एक ऐसे आतें हैं कि वहां स्वर संभालना कठिन हो जाता है।[11, टी ़वी ़ पर विभिन्न चैनलों पर सुगम संगीत के इतने कार्यक्रम चल रहे हैं कि आज का हर नव युवक उनको देख कर गाना सीखना चाहता हेै। इसी भावना से वह विद्यालय स्तर पर जब वह संगीत विषय लेता है तो उसके मन में होता है कि वह एक अच्छा गायक बनेगा परंतु शास्त्रीय संगीत की गुझंलदार बारीकियांे में उलझ कर वह जल्द ही अपने फैसले पर पछताने लगता है । सुगम संगीत के पाठयक्रम में शामिल होने से विद्यार्थी शुरु से ही स्वर ज्ञान ग्रहण करने के पश्चात् भजन, गीत, गजल तथा लोकगीत को गाना सीखे और जैसे ही उसका संगीत से सबंध सुघड़ हो उसे शास्त्रीय संगीत सीखने के लिय प्रेरित तथा प्रोतसाहित किया जाए। इस से संगीत विषय को लेने तथा सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या मेेें भारी इजाफा होगा ऐसा मेरा मानना है । डॉ0 मधुबाला सक्सेना भी इस बात से सहमत है परंतु वह यह सब माध्यमिक स्तर पर चाहती हैं उनके अनुसार, 'संगीत के अन्तर्गत गायन वादन व नृत्य तीनों का समन्वय होने के कारण प्राथमिक स्तर पर भावों का संकेत करते हुए समूह गान आदि

तत्पश्चात माध्यमिक स्तर पर समूह नृत्य, लोक नृत्य, लोकगीत, देश प्रेम के गीतों आदि को उचित स्थान दिया जाना चाहिए'।[12] दुसरा सुझाव यह है कि पाठयक्रम में आज के दौर में संगीत और कम्प्यूटर का जो आपस मे गहरा सबंध है उसको समझते हुऐ कम्प्यूटर को संगीत विषय में शामिल करना चाहिए । आज के युग में जब हर एक घर मंे कम्प्यूटर अपनी जगह बना चुका है तथा Internet हर एक की जिन्दगी का अनिवार्य अंग बन चुका है, हमे उसके महत्व को समझना चाहिए । आज प्दजमतदमज पर सेंकड़ौं ऐसी साईटस हैं जहा पर शास्त्रीय संगीत उप-शास्त्रीय संगीत तथा सुगम संगीत का लगभग हर बडे कलाकार की चीजे आसानी से डाउनलोड की जा सकती है। जिन को सुन कर देखकर विद्यार्थी अपने गाने तथा ज्ञान को बढ़ा सकते हैं । इसके इलावा कम्प्यूटर में संगीत से सम्बंधित अनेकों साफटवेयर हैं जिन का यदि ज्ञान विद्यार्थी को हो जाये तो वह उससे आपनी जिंदगी अच्छे से बसर कर सकता है । अंत में यही कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में संगीत का स्थान कम नहीं हुआ है बल्कि संगीत अपने अच्छे दौर से गुजर रहा है । जरुरत है तो इस बात की कि समय की नब्ज को समझते हुए संगीत के पाठयक्रम में उचित तथा समय की सोच के अनुरुप बदलाव किये जाऐं तां कि अधिक से अधिक विद्यार्थी संगीत की और आकषर््िात हो सकें । यही संगीत और हम सब के लिए कल्याणकारी होगा ।

Reference:-

1. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, डा0 मधुबाला सक्सेना पृ0 43
2. पंजाब में संगीत कला का निकास और विकास, पन्ना लाल मदान, पृ0 19
3. भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत, अंजलि मितल, पृ0 63
4. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, डा0 मधुबाला सक्सेना पृ0 74
5. संगीत में घराना (बाबू भाई बैकर) संगीत कला विहार, पृ0 250
6. घराने की तालीम और विश्वविद्यालय शिक्षण पद्धति, ड0 मुकेश गर्ग, पृ0 5
7. वही
8. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, डा0 मधुबाला सक्सेना पृ0 123
9. पाठयक्रम, पब्लिकेशन ब्यिुरो, पंजाबी विश्व विद्यालय पटियाला प0 56 -58
10. Website, M.D. University, Rohtak
11. संगीत निबन्ध संग्रह, सुरिन्द्र बली, पृ0 84
12. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, डा0 मधुबाला सक्सेना पृ0 145

Bibliography:-

1. भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, डा0 मधुबाला सक्सेना,हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगड़,1990
2. पंजाब में संगीत कला का निकास और विकास, पन्ना लाल मदान, पब्लिकेशन ब्यिुरो, पंजाबी विश्व विद्यालय पटियाला ,1986
3. भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत, अंजलि मितल, कन्ष्कि पब्लिकेशर्स, नई दिल्ली,2010
4. संगीत में घराना (बाबू भाई बैकर) संगीत कला विहार, जुन 1957
5. घराने की तालीम और विश्वविद्यालय शिक्षण पद्धति, ड0 मुकेश गर्ग, संगीत, जनवरी फरवरी,1982
6. पाठयक्रम, पब्लिकेशन ब्यिुरो, पंजाबी विश्व विद्यालय पटियाला 2012
7. Website, M.D. University, Rohtak
8. संगीत निबन्ध संग्रह, सुरिन्द्र बली, संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद, 1962